ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1232110

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

पद्मावत की ऐतिहासिकता

Kumar Manish[*1]
[*1]PG, Department of Hindi, Tilka Manjhi Bhagalpur University - 812007, India

Cite This Article: Kumar Manish. (2018). "पद्मावत की ऐतिहासिकता." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 6(3), 308-314. https://doi.org/10.5281/zenodo.1232110.

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्याकाश में 'पद्मावत' दैदिप्यमान् नक्षत्र है। जायसी ने 16 वीं सदी में ठेठ अवधी भाषा में इस महाकाव्य का सृजन किया था। इसकी भाषा की मिठास, भाव सौंदर्य, सूफी अध्यात्म और ऐतिहासिकता देखते नहीं बन पड़ती है। कवि ने इस महाकाव्य का सृजन लोक, कल्पना और इतिहास के योग से की है। जायसी ने अवध प्रांत की लोकप्रचलित रानी और सुग्गे की कथा में चित्तौड़ की रानी पद्मिनी के जौहर की कथा का सम्मिश्रण कर, 'पद्मावत' का सृजन किया है। यह महाकाव्य मध्यकालीन भारतवर्ष का दर्पण है। इसमें तत्कालीन भारतीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक वैभव दिखाई देता है।

हिन्दी साहित्य के विभिन्न विद्वानों ने 'पद्मावत' की ऐतिहासिकता की परीक्षा अपने–अपने ढंग से की है। महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्त्रोत जैसे– पुरातात्विक अवशेष, शिलालेख, समकालीन साहित्यक ग्रंथ एवं इतिहास की पुस्तकों से इसकी ऐतिहासिकता की परीक्षा संभव है। इस रचना की ऐतिहासिकता की परीक्षा से पूर्व इसके रचनाकार के इतिहास के विषय में जानकारी प्राप्त करना अनिवार्य है।

जायसी का जन्म इस्लाम कैलेंडर के अनुसार नौ सौ हिजरी (1495ई0) में हुआ था। तीस वर्ष बाद उन्होंने कविता की रचना प्रारंभ की। जायसी ने 'पद्मावत' में स्वयं के जन्म तथा कविता की रचना के विषय लिखा है :

"भा औतार मोर नौ सदी। तीस बरस ऊपर कबि बदी।।"[1]

जायसी का ननिहाल मानिकपुर, जिला प्रतापगढ़ था। वहीं उसका पालन–पोषण हुआ। बड़े होने पर वे अपनी मातृभूमि को लौट आए। जायस नगर, जिला अमेठी के कंचाना मुहल्ला में इनका गृह स्थान है। ये तीन भाई थे। ये सबसे बड़े थे। इनका विवाह हुआ था। इनको एक पुत्र था। जिनकी मृत्यु दीवार के ढह जाने से हुई थी। आगे इनका वंश नहीं चला। वहीं उन्होंने 'पद्मावत' की रचना प्रारंभ की। 'पद्मावत' की रचना का प्रारंभ लगभग 927 हिजरी (1520ई0) में हुआ था। कवि 'पद्मावत' की रचना काल का वर्णन करते हुए लिखते हैं :

"सन नव सै सत्ताइस अहा। कथा अरंभ बैन कवि कहा।।"[2]

जायसी 'आखिरी कलाम' में लिखते हैं :

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1232110

''जायस नगर मोर अस्थानू। नगर क नाँव आदि उदियानू।
तहाँ देवस दस पहुँने आएउँ। भा बैराग बहुत सुख पाएउँ।''[3]

जायसी ने 'पद्मावत' की रचना फारसी की मसनवी शैली पर की है। इस शैली में महाकाव्य के प्रारंभ में तत्कालीन शासक की प्रशंसा की जाती है। कवि ने 'पद्मावत' के प्रारंभ में मसनवी की रूढ़ि के अनुसार शाहे वक्त शेरशाह (1540ई0) का गुणगान किया है। यह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि 'पद्मावत' की रचना (1538–45ई0) शेरशाह के शासनकाल में हुई है। जायसी 'पद्मावत' के प्रारंभ 'स्तुति खंड' में लिखते हैं :

''सेरसाहि देहली सुलतानू। चारिउ खंड तपै जस भानू।।
ओहि छाज छात औ पाटा। सब राजै भुई धरा लिलाटा।।
जाति सूर औ खाँड़े सूरा। औ सुनि बुधिवंत सबै गुन पूरा।।
सूर नवाए नवखंड नवई। सातउ दीप दुनी सब नई।।
तहँ लगि राज खड़ग करि लीन्हा। इसकंदर जुलकरन जो कीन्हा।।
हाथ सुलेमा केरि अँगूठी। जग कहँ दान दीन्ह भरि मूठी।।
औ अति गरू भूमिपति भारी। टेकि भूमि सब सिहिटि सँभारी।।
दीन्ह असीस मुहम्मद, करहु जुगहि जुग राज।
बादसाह तुम जगत के जग तुम्हार मुहताज।।''[4]

इस महाकाव्य की रचना जायस नगर में हुई थी। यह नगर उत्तर प्रदेश के अमेठी जिले में स्थित है। कवि लिखते हैं :

''जायस नगर धरम अस्थानू। तहाँ आइ कवि कीन्ह बखानू।।''[5]

जायसी ने सूफी पीर से आध्यात्म ज्ञान की शिक्षा ली थी। ये निजामुद्दीन औलिया की शिष्य परंपरा में थे। इस परंपरा की दो शाखाएँ हुईं– एक मानिकपुर, कालपी आदि की, दूसरी जायस की। उन्होंने 'पद्मावत' में जौनपुर शाखा के चिश्ती परंपरा के सैयद् असरफ के प्रति श्रद्धा अभिव्यक्त की है। जायसी ने सैयद अशरफ जहाँगीर को अपना दीक्षागुरू माना है। 'पद्मावत' में दोनों पीरों का उल्लेख इस प्रकार है–

''सैयद असरफ पीर पियारा। जेहि मोहिं पंथ दीन्ह उँजियारा।।
लेसा हियें प्रेम कर दीया। उठी जोत भा निरमल हीया।।''[6]

उन्होंने मानिकपुर के मुहीउद्दीन की भी गुरू वंदना की है।

''गुरू मोहिदी खेवक मैं सेवा। जलै उताइल जेहि कर खेवा।।
अगुवा भएउ सेख बुरहानू। पंथ लाइ मोहि दीन्ह गियानू।।''[7]

शेख मुबारक साह बोदले उनके दूसरे गुरू थे। उनकी प्रमुख कृतियाँ पद्मावत, अखरावट,आखिरी कलाम और कन्हावत् हैं।

जायसी कुरूप और काले थे। उन्हें एक आँख और एक कान से दिखाई और सुनाई नहीं पड़ता था। यह लोकप्रसिद्ध घटना है कि एक बार मलिक मुहम्मद जायसी शेरशाह सूरी के दरबार में गये थे। वहाँ उनके चेहरे को देखकर, सभी हँसने लगे। इस पर जायसी ने कहा कि 'मोहि का हससि कि कोहरहि'। अर्थात् तू मुझ पर हँसा या उस कुम्हार पर। यह सुनकर पूरी सभा लज्जित हो गई। कहा जाता है कि 'पद्मावत' की रचना 1520ई0 में प्रारंभ हुई और शेरशाह के समय 1540ई0 में पूर्ण हुई थी।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1232110

विद्वानों ने 'पद्मावत' को दो हिस्सों में बाँटा है। पूर्वार्ध काल्पनिक और उत्तरार्ध ऐतिहासिक कथा पर आधारित है। पूर्वार्ध की कथा राजा रत्नसेन के योगी बनकर सिंहलगढ़ पहुँचने की कथा है; और उत्तरार्ध में बादशाह अलाउद्दीन की चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण की कथा है।

यह इतिहास प्रसिद्ध सत्य है कि दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन ने सन् 1303 ई0 में चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण किया था। दोनों राज्यों की सेनाओं के मध्य भीषण संघर्ष हुआ था।

अलाउद्दीन को युद्ध में विजय मिली थी। परंतु, उन्हें पद्मिनी की प्राप्ति नहीं हुई थी। उनके चित्तौड़गढ़ दुर्ग में प्रवेश करने से पूर्व ही रानी पद्मिनी हजारों वीर क्षत्राणियों के साथ जौहर हो गईं। जायसी ने 'पद्मावत' में इतिहास की सच्ची घटनाओं में कल्पना का सम्मिश्रण कर 'पद्मावत' का सृजन किया है।

आ0 रामचंद्र शुक्ल ने 'पद्मावत' की भूमिका में लिखा है कि :

''पदमावती की संपूर्ण आख्यायिका को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं। रत्नसेन की सिंहलद्वीप यात्रा से लेकर चित्तौड़ लौटने तक हम कथा का पूर्वार्ध मान सकते हैं और राघव के निकाले जाने से लेकर पद्मिनी के सती होने तक उत्तरार्ध। ध्यान देने की बात यह है कि पूर्वार्ध तो बिल्कुल कल्पित कहानी है और उत्तरार्ध ऐतिहासिक आधार पर है।''[8]

मलिक मुहम्मद जायसी को इतिहास की पूर्ण जानकारी थी। उन्होंने 'पद्मावत' में चित्तौड़गढ़, सिंहलगढ़, दिल्ली,उड़ीसा,चँदेरी और कुंभलनेर राज्यों का वर्णन किया है। इन राज्यों के राजाओं की कहानी कही है। कवि ने इन ऐतिहासिक चरित्रों के माध्यम से सूफी साधना के ज्ञान को अभिव्यंजित किया है। जायसी को भारतवर्ष के इतिहास ग्रंथों का पूर्ण ज्ञान था। कथा के ऐतिहासिक आधार की सत्यता के प्रमाण हेतु कर्नल टॉड द्वारा दिये गये वर्णन देखे जा सकते हैं ।

''विक्रम संवत् 1331 में लखनसी चित्तौड़ के सिंहासन पर बैठा। वह छोटा था, इससे इसका चाचा भीमसी ही राज्य करता था। भीमसी का विवाह सिंहल के चौहान राजा हम्मीर शंक की कन्या पद्मिनी से हुआ था, जो रूप गुण में जगत् में अद्वितिय थी। उसके रूप की ख्याति सुनकर दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर चढ़ाई की।...........................''

'आइने अकबरी' में भी यह वृत्तांत है। उसमें लिखा है कि अलाउद्दीन दूसरी चढ़ाई में भी हारकर लौटा। वह लौटकर चित्तौड़ से सात कोस पहुँचा ही था कि रूक गया और मैत्री का नया प्रस्ताव भेजकर रतनसी को मिलाने के लिए बुलाया। अलाउद्दीन की बार–बार की चढ़ाइयों से वह ऊब गया था। इससे उसने मिलना स्वीकार किया। वह एक विश्वासघाती को साथ लेकर अलाउद्दीन से मिलने गया और धोखे से मार डाला गया। उसका संबंधी अरसी चटपट चित्तौड़ के सिंहासन पर बिठाया गया। अलाउद्दीन चित्तौड की ओर फिर लौटा उस पर अधिकार किया। अरसी मारा गया और पद्मिनी सब स्त्रियों के सहित सती हो गई।

जायसी ने 'पद्मावत' में ऐतिहासिक चरित्र राजा रत्नसेन, रानी पद्मावती, बादशाह अलाउद्दीन, राघवचेतन और नागमती को सूफी साधना के अवयव के रूप में चित्रित किया है। वे 'पद्मावत' के उपसंहार में लिखते हैं :

''तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल बुधि पदमिनि चीन्हा।।
गुरू सुआ जेइ पंथ देखावा। बिनु गुरू जगत को निरगुन पावा।।
नागमती यह दुनिया धंधा। बाँचा सोइ न एहि चित बंधा।।
राघव दूत सोई सैतानू। माया अलाउदीं सुलतानू।।''[9]

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1232110

जायसी ने मानव शरीर को चित्तौड़, मन को राजा, ह्रदय को सिंहलगढ़ और पद्मिनी को सात्विक बुद्धि माना है, जो साधक को ईश्वर से मिलाती है या वह ईश्वर है। हीरामन सूआ निर्गुण ब्रह्म मार्ग का गुरू है, जो राजा रत्नसेन को पद्मावती से मिलवाता है। नागमती संसार का दुनिया–धंधा है, जो साधक को ईश्वर से मिलने की बाधा है। राघवदूत शैतान और अलाउद्दीन माया रूप में चित्रित हैं।

अलाउद्दीन ने 1303 ई0 में चित्तौड़गढ़ पर चढ़ाई की। इस चढ़ाई में राणा अपने ग्यारह पुत्रों सहित मारे गए। जब ग्यारह पुत्र मारे गए और राणा के युद्ध में जाने की बारी आई, तब पद्मिनी ने जौहर किया। हजारों राजपूत वीरांगनाओं के साथ पद्मिनी ने चित्तौड़गढ के भूधरे में आग में प्रवेश किया और उधर रणक्षेत्र में वीर भीमसी ने शरीर त्याग किया। जायसी ने इतिहास प्रसिद्ध घटना में थोड़े परिवर्त्तन के साथ 'पद्मावत' की रचना की है। इसके पात्र ऐतिहासिक और काल्पनिक दोनों हैं।

'पद्मावत' में ऐतिहासिक घटना निम्न प्रकार से है :

राजा रत्नसेन चित्तौड़ के राजा हैं। उनकी पत्नी पद्मावती रूप और गुण में जगत् में अद्वितीय है। राजा रत्नसेन के दरबार का एक पंडित राघवचेतन दिल्ली के बादशाह के दरबार में जाकर पद्मावती के रूप–सौंदर्य का बखान करता है। जिसे सुनकर बादशाह अलाउद्दीन के ह्रदय में रानी पद्मावती के प्रति लोभ जाग्रत हो जाता है। वह राजा रत्नसेन को पद्मावती को देने का सँदेश भिजवाता है। राजा रत्नसेन बादशाह को पद्मिनी को देने से इन्कार कर देते हैं। तब अलाउद्दीन चित्तौड़गढ़ पर चढ़ाई कर देता है। उन्हें सफलता नहीं मिलती है। वे छः महीने तक गढ़ को छेके रहता है। अंत में, वह राजा रत्नसेन को संधि का प्रस्ताव भेजता है। राजा रत्नसेन के दरबार के वीर सामंत गोरा और बादल, राजा को संधि करने से मना करते हैं। राजा रत्नसेन बादशाह से संधि कर लेते हैं। राजा द्वारा उनकी बात न मानने पर वे रूठकर घर चले जाते हैं। बादशाह अपने सहचरों के साथ गढ़ में प्रवेश कर जाते हैं। वहाँ एक दिन राजा के साथ शतरंज खेलने में वह रानी पद्मिनी का प्रतिबिम्ब दर्पण में देखता है। गढ़ से बाहर निकलने के क्रम में अंतिम फाटक पर, वह राजा रत्नसेन को छल से बंदी बना लेता है। वह गढ़ पर संदेश भेजता है कि रानी पद्मिनी के प्राप्त होने पर, वह राजा को बंदीगृह से मुक्त कर देगा।

रानी पद्मावती इस संकट को टालने हेतु गोरा और बादल के घर पर जाती हैं। वह उनसे राजा रत्नसेन को बादशाह के बंदीगृह से मुक्त कराने की विनती करती हैं। अंत में, यह निर्णय होता है कि बादशाह को यह सँदेश भेजा जाए कि रानी पद्मिनी उनके पास जायेगी, किंतु रानी की मर्यादा के साथ। सोलह सौ पालकी में सोलह सौ वीर सैनिक और एक पालकी में एक लोहार अपने औजार के साथ चढ़ कर, बादशाह के निकट जाता है। बादशाह के पास यह खबर भेजी जाती है कि रानी पहले राजा से मिलकर, तब आपके पास जायेगी। बादशाह उन्हें इस बात की अनुमति प्रदान करते हैं। लोहार राजा रत्नसेन की बेड़ियों को काट देता है। बादल राजा को लेकर चित्तौड़ वापस आ जाता है। गोरा बादशाह की सेना के साथ युद्ध करते हुए काम आ जाता है। बादल चित्तौड़गढ़ के फाटक पर युद्ध करते हुए शहीद हो जाता है। जायसी ने राजा रत्नसेन को कुंभलनेर के राजा के साथ द्वंद्व युद्ध में वीरगति की प्राप्ति होना चित्रित कर चरितनायक के आन की रक्षा की है।

इतिहासकारों ने 'पद्मावत' की कहानी की ऐतिहासिकता की सत्यता को स्वीकार किया है। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ0 हरिश्चन्द्र वर्मा की पुस्तक 'मध्यकालीन भारत का इतिहास' में सन् 1303 ई0 में आलउद्दीन खिलजी का चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण का उल्लेख है। वे लिखते हैं '1303ई0 में वह चित्तौड़ को पराजित करने में सफल हुआ, जिसे कोई भी पूर्ववर्ती सुल्तान नहीं जीत सका था।'[10]

जायसी ने इतिहास प्रसिद्ध घटना को 'पद्मावत' का उपजीव्य बनाया है। महाकाव्य की कथा के सृजन हेतु ऐतिहासिक तथ्य की सत्यता के साथ कल्पना के योग की भी आवश्यकता होती है। अतः, जायसीकृत 'पद्मावत' में इतिहास की सत्यता के साथ–साथ कल्पना की ऊँची उड़ान भी है।

'पद्मावत' में चित्तौड़गढ़ के राजा रत्नसेन की ऐतिहासिकता निः संदिग्ध है। विभिन्न इतिहास ग्रंथों में चित्तौड के राजा रत्नसेन के नाम का उल्लेख मिलता है। अबुल फजलकृत आईने अकबरी एवं कर्नल टॉड के 'राजस्थान का इतिहास' में रत्नसिंह नाम मिलता है। जायसी ने महाकाव्य का चरितनायक इतिहास प्रसिद्ध राजा रत्नसेन को बनाया है। जो रानी पद्मावती का प्रेमी और पति दोनों हैं।

'पद्मावत' की ऐतिहासकिता की परख उत्तरार्ध में होती है। राजा रत्नसेन, पद्मावती और अलाउद्दीन ऐतिहासिक पात्र हैं। अलाउद्दीन का चित्तौड़ पर आक्रमण इतिहास ग्रंथों में वर्णित है।

रत्नसेन एवं पद्मावती का चित्तौड़ का राजा एवं रानी होना तथा उसका अलाउद्दीन के साथ संघर्ष इतिहास प्रसिद्ध घटना है। 'पद्मावत' में उल्लखित सभी घटनाएँ इतिहास सम्मत नहीं हैं। कवि ने महाकाव्य की कथा में रोचकता लाने के लिए ऐतिहासिक तथ्य को तोड़–मरोड़कर प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

उदाहरण के लिए गौरी शंकर हीरा चंद ओझा ने उदयपुर राज्य के इतिहास में लिखा है कि ''..1303 ई0 में अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया था। छः मास के घेरे के अनन्तर उसे विजय किया।''[11]

किन्तु, जायसी ने लिखा है – अलाउद्दीन ने आठ वर्षों तक चित्तौड़ का घेरा डाले रहा।

'' आठ बरिस गढ़ छेका अहा, धनि सुलतान कि राजा महा।''[12]

रत्नसेन की मृत्यु मुसलमान सेनानी द्वारा न होकर देवपाल के हाथों हुई ;वरंच यह तथ्य भी इतिहास सिद्ध नहीं है। अलाउद्दीन के कैदखाने से राजा का निकल भागना भी इतिहास सम्मत नहीं है। जायसी ने अवध प्रांत में प्रचलित पद्मावती रानी और सुग्गे की कथा और चित्तौड़ में जौहर कर प्राणाहुति देने वाली पद्मिनी रानी की कथा को संपृक्त कर दिया है। अतः, यह कथा न तो पूर्णतः ऐतिहासिक और न ही पूणर्त : काल्पनिक प्रतीयमान होती है।

आ0 रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य के इतिहास' में लिखा है कि ''पदमावत' में प्रेमगाथा की परंपरा पूर्ण प्रौढ़ता को प्राप्त मिलती है। यह उस परंपरा में सबसे अधिक प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसकी कहानियों में भी विशेषता है। इसमें इतिहास और कल्पना का योग है। चित्तौर की महारानी पद्मिनी या पद्मावती का इतिहास हिन्दू हृदय के मर्म को स्पर्श करने वाला है। जायसी ने यद्यपि इतिहास प्रसिद्ध नायक और नायिका ली है पर उन्होंने अपनी कहानी का रूप वही रखा है। जो कल्पना के उत्कर्ष द्वारा साधारण जनता के हृदय में प्रतिष्ठित था।

इस रूप में इस कहानी का पूर्वाद्ध तो बिल्कुल कल्पित है और उत्तरार्ध ऐतिहासिक आधार पर है।''[13]

जवाहर लाल नेहरू ने अपनी पुस्तक The Discovery of India (भारत की खोज) में 'पद्मावत' की चर्चा की है। वे लिखते हैं कि

'''Two of the best known Hindi poets are Malik Mohammad Jaisi who wrote Padmavat and Abdul Rahim Khhan Khana, One of the Premier nobles of Akbar`s court and son of his guardian.''[12]

इस प्रकार नेहरू की लेखनी से 'पद्मावत' की ऐतिहासिकता सिद्ध होती है।

आ0 शुक्ल ने कर्नल टॉड के राजस्थान का इतिहास एवं अबुल–फजल के आईने–अकबरी के आधार पर 'पद्मावत' की ऐतिहासिकता प्रमाणित की है।

शिवसहाय पाठक ने अपनी पुस्तक 'पद्मावत का काव्य सौंदर्य' में इसके विपरीत प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। उनके अनुसार इतिहासकारों ने 'पद्मावत' की कथा से ही इतिहास की रचना की है। 'पद्मावत' की कथा की लोकप्रियता के कारण इतिहासकारों ने उसे ही इतिहास मान लिया। अबुल फजल कृत 'आईने–अकबरी' में रत्नसिंह का नाम आया है और उसका धोखे से मारे जाने का वर्णन है। 'पद्मावत' की रचना के 70 वर्ष बाद मुहम्मद कासिम फरिश्ता ने 'तारीख फरिश्ता' लिखी, जिसमें उसने पद्मिनी को रत्नसेन की बेटी लिखा है। खिलजी वंश के प्रमाणिक इतिहासों में अमीर खुसरो की 'तारीख–ई–अलाई' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। खुसरो स्वयं चित्तौड़ की लड़ाई में खिलजी के साथ था। परंतु, उसने कहीं भी पद्मिनी के लिए लड़ाई का होना नहीं लिखा है। जियाउद्दीन बर्नी भी अलाउद्दीन के समकालीन इतिहासकार हैं। उन्होंने खिलजी के दुष्कृत्यों की आलोचना भी की है। किंतु, उस इतिहासकार ने भी पद्मिनी का उल्लेख नहीं किया है।

खुसरो ने खिजिर खाँ एवं देवल देवी की प्रेमकथा को अपनी मसनवी 'आशिकाह' में अमर कर दिया है। किंतु, इस सहृदय कवि ने भी पद्मिनी का कहीं नाम नहीं लिया है।

महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अपने 'उदयपुर राज्य का इतिहास' नामक ग्रंथ में पद्मिनी की कथा को कवि की कल्पना मात्र माना है। उनका कहना है कि पद्मावत, टॉड, फरिश्ता आदि के चित्तौड संबंधी तथ्यों में यदि कुछ सत्य है तो यही कि 1303–04ई0 में अलाउद्दीन ने चित्तौड पर आक्रमण किया था और छः मास के घेरे के अनंतर उसे जीत लिया था। रत्नसिंह सामंतो सहित लड़ाई में मारा गया। कुछ समय के लिए चित्तौड पर मुसलमानों का राज्य हो गया।

पद्मावत में ऐतिहासिक तथ्य केवल ये हैं :
1. रत्नसेन चित्तौड का राजा था। शिलालेखों में उसके शासन का उल्लेख है।
2. दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन ने चित्तौड विजय किया था।
3. क्षत्राणियों ने जौहर किया था।
4. चित्तौड और दिल्ली आदि ऐतिहासिक नगर हैं।

इस प्रकार, प्रमाणित है कि 'पद्मावत' ऐतिहासिक तथ्यों पर आधृत काल्पनिक महाकाव्य है। इसमें यत्र–तत्र लोक कथा का पुट भी है।

पदमावत की कथा लोक हृदय में श्रद्धा एवं विश्वास के पात्र रानी पद्मिनी ओर राजा रत्नसेन की अमर प्रेम कथा है। जायसी ने इसकी कथा को इतिहास से ग्रहण किया है। और उसे कल्पना के सहारे उत्कृष्ट रूप दिया है। इस महाकाव्य का सृजन ऐतिहासिक तथ्यों में कल्पना के सम्मिश्रण से हुआ है। यह महाकाव्य आध्यात्मिक ज्ञान के साथ–साथ भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास का जीवंत दस्तावेज़ है। रत्नसेन, पद्मावती, अलाउद्दीन, नागमती,राघवचेतन ऐतिहासिक चरित्र होने के साथ–साथ आध्यात्मिक प्रतीक भी हैं। कवि ने ऐतिहासिक घटनाओं में सूफी अध्यात्म का सुंदरता से निरूपण किया है। अतः, यह महाकाव्य आध्यात्मिक दृष्टि के साथ–साथ ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Jan 16, 2018 - Accepted: Mar 30, 2018)
DOI: 10.5281/zenodo.1232110

संदर्भ ग्रंथ सूची :

[1] शुक्ल,आचार्य रामचंद्र, आखिरी कलाम (जायसी ग्रंथावली),प्रथम संस्करण,इलाहाबाद,जय भारती प्रकाशन,2005, पृ0–318,दो0–4
[2] उपरिवत, पृ0–9,दो0–24
[3] शुक्ल,आचार्य रामचंद्र, आखिरी कलाम (जायसी ग्रंथावली),प्रथम संस्करण,इलाहाबाद,जय भारती प्रकाशन,2005, पृ0–320,दो0–10
[4] उपरिवत, पृ0–5,दो0–13
[5] उपरिवत, पृ0–8,दो0–23
[6] उपरिवत्, पृ0–7,दो0–18
[7] उपरिवत्, पृ0–7,दो0–20
[8] उपरिवत, पृ0–19
[9] उपरिवत, पृ0–282, दो0–1
[10] वर्मा,हरिश्चंद्र,मध्यकालीन भारत,हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय,दिल्ली विश्वविद्यालय,पृ0–167
[11] ओझा, श्री गौरी शंकर हीराचन्द, उदयपुर राज्य का इतिहास,प्रथम जिल्द,पृ0–187
[12] शुक्ल,आ0रामचंद्र,जायसी ग्रंथावली,राजा–बादशाह युद्ध खंड,पृ0–223
[13] आचार्य रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, तृतीय संस्करण, काशी, नागरी प्रचारीणी सभा, संवत् 2060 पृ0–56
[14] Nehru,Jawahar Lal, Discovery of India, JAWAHARLAL NEHRU MEMORIAL FUND, OXFORD UNIVERSITY PRESS, Page-26

*Corresponding author.
E-mail address: kumarmanishfornet@ gmail.com